<u>प्रेस विज्ञप्ति</u>

प्राध्यापकों ने की चम्मच दौड़, सुई में डाला धागा

सांची विश्वविद्यालय में शिक्षक दिवस समारोह

- **शिक्षकों ने साझा किए अपने छात्र जीवन के खट्टे-मीठे अनुभव**
- **शिक्षकों ने लिया खेलों का लुत्फ, छात्रों ने जाना आत्मानुशासन का महत्व**
- **छात्रों ने की कविताओं, नाटकों और माइम की प्रस्तुति**
- **सीनियर छात्रों ने किया नए छात्रों का अभिनंदन**

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में शिक्षक दिवस पर सभी विभागों के छात्रों ने विभिन्न सांस्कृतिक और मनोरंजक कार्यक्रम आयोजित किए। छात्रों ने शिक्षकों के सम्मान के साथ कई छोटे-छोटे इंडोर गेम्स भी आयोजित किए जिनका गुरुजनों ने जमकर लुत्फ उठाया। छात्रों ने शिक्षकों से उनके छात्र जीवन के खट्टे-मीठे अनुभव भी सुने। टीचरों ने ब्लैक बोर्ड पर आंख बंद कर निशाना बनाना, पानी भरे कटोरे में प्लास्टिक की बॉल फेंकने और चम्मच रेस का भी मज़ा लूटा।

शिक्षक दिवस पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव श्री अदिति कुमार त्रिपाठी ने छात्रों को आत्मानुशासित बनने की सीख दी। उन्होने कहा कि सांची विश्वविद्यालय का उद्देश्य विश्व के समस्त दर्शनों का भारतीय परिप्रेक्ष्य में अध्ययन कराना है चाहे वो ईसाई दर्शन हो, इस्लाम का दर्शन हो, यहूदी दर्शन हो या फिर कोई भी वैश्विक दर्शन। श्री त्रिपाठी ने कहा कि विद्या अभ्यास से आती है और विश्वविद्यालय के छात्र, शिक्षक, कर्मचारी मिलकर अपने आत्मानुशासन और अध्ययन से विश्वविद्यालय को विश्वस्तरीय बनाएंगे।

छात्रों ने “**परीक्षा हो गई**”विषय पर एक मूक नाट्य प्रस्तुति भी दी जिसे सबने खूब सराहा। नकल को हास्य के अंदाज में प्रदर्शित करती प्रस्तुति पर सभी ने जमकर तालियां बजाईं।कई शिक्षकों ने अपनी गायन प्रतिभा को भी मंच पर प्रस्तुत किया। छात्रों द्वारा किए गए इस आयोजन में बौद्ध दर्शन के छात्र कमलेश ने कहा कि व्यक्ति में मिलावट, दिखावट, बनावट और सजावट नहीं होने चाहिए। कुछ छात्राओं ने अपनी स्वयं द्वारा लिखित कविताएं भी मंच पर प्रस्तुत कीं। विश्वविद्यालय के एम.फिल और पी.एच.डी के सीनियर छात्रों ने इस अकादमिक सत्र 2019-20 में एडमिशन लेने वाले छात्रों को सम्मानपूर्व गिफ्ट भी दिए। इंडियन पेंटिंग विभाग की ओर से सभी प्राध्यापकों को विभाग की छात्रा द्वारा तैयार किया गया एक स्मृति चिन्ह भी भेंट किया गया।

योग विभाग के छात्रों द्वारा एक माइम प्रस्तुति में दर्शाया गया कि कैसे बिगड़े हुए छात्र अपने छात्र जीवन में शिक्षक की बातें नहीं मानते और भविष्य में सफल नहीं हो पाते और शराबी बन जाते हैं। छात्रा नेहा सैनी द्वारा एक डॉक्यूमेंट्री भी प्रस्तुत की गई।

भारतीय दर्शन विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ नवीन दीक्षित ने डॉ. राधाकृष्णन द्वारा दर्शन के क्षेत्र में किए गए कार्यों के विषय में बताया। डीन डॉ नवीन मेहता ने अपने बॉलीवुड फिल्म के लिए स्वयं द्वारा लिखे एक गीत की कुछ पंक्तियों को प्रस्तुत किया।

city भास्कर BHOPAL, FRIDAY, 06/09/2019 . 18

टीचर्स डे सेलिब्रेशन : शहर के स्कूल-कॉलेज व विवि में मनाया गया शिक्षक दिवस, बच्चों ने दी रंगारंग प्रस्तुतियां, शिक्षकों का हुआ सम्मान

मंजिल की राह के मार्गदर्शक बने गुरुओं का सम्मान

शिक्षक दिवस के अवसर पर गुरुवार को शहर में कई जगह आयोजन हुए। स्कूल, कॉलेज और विवि में शिक्षकों का सम्मान किया गया, वहीं स्टूडेंट्स ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियों में गुरुओं की महिमा व महत्व को बताया।

1. सेंट जोसेफ कॉन्वेन्ट सीनियर सेकंडरी स्कूल ईदगाह हिल्स में शिक्षक दिवस मनाया गया। वहीं विद्यालय के विभिन्न वर्गों की छात्राओं ने शिक्षकों के सम्मान में रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

2. कैंपियन स्कूल में गुरुवार को शिक्षक दिवस धूमधाम से मनाया गया। यहां छात्रों ने स्वागत भाषण दिया और सेकंडरी सेक्शन के बच्चों ने प्रार्थना गीत और नृत्य पेश किया।

3. सांची बौद्ध विवि शिक्षक दिवस पर छात्रों ने विभिन्न सांस्कृतिक और मनोरंजक कार्यक्रम प्रस्तुति किए। छात्रों ने शिक्षकों के सम्मान के साथ कई छोटे-छोटे इंडोर गेम्स में भी हिस्सा लिया।

4. केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 3 में शिक्षक दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर बच्चों ने शिक्षकों को डेडिकेट करते हुए रंगारंग प्रस्तुतियां देकर सभी से प्रोत्साहन प्राप्त किया।

5. दिल्ली पब्लिक स्कूल गुरुवार को शिक्षक दिवस उत्साह से मनाया गया। यहां स्टूडेंट्स ने रेट्रो थीम पर विभिन्न प्रस्तुति दीं, इनमें 70-80 के दशक का फैशन, गाने, नृत्य आदि को दिखाया।

6. जवाहर बाल भवन में शिक्षक दिवस पर संगीत कार्यशाला का आयोजन किया गया। यहां निर्मला उपाध्याय ने बच्चों को भीष्म सिंह चौहान की रचना ज्ञान की ज्योति जगाने वाले... पर गायन सिखाया।

7. आनंद विहार स्कूल में शिक्षक दिवस पर छात्रों ने रंगारंग प्रस्तुतियों से शिक्षकों के दायित्व से रूबरू कराया। कविता, एकल

सेंट जोसेफ कॉन्वेंट

कैंपियन स्कूल

सांची बौद्ध विश्वविद्यालय

केंद्रीय विद्यालय-3

दिल्ली पब्लिक स्कूल

जवाहर बाल भवन

आनंद विहार स्कूल

एमसीयू में व्याख्यान का आयोजन

माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विवि में शिक्षक दिवस पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। इसमें शिक्षाविद् प्रो. अनिल सद्गोपाल ने कहा कि हमें देश को वहां लेकर जाना है, जहां भारत की अच्छी शिक्षा व्यवस्था हो। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति दीपक तिवारी, विवि के कुलाधिसचिव डॉ. श्रीकांत सिंह सहित विवि के शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी और विद्यार्थी विशेष रूप से उपस्थित रहे।

मितेश राठी क्लासेस में सम्मान समारोह

शिक्षक दिवस पर जोन-2, एमपी नगर स्थित आईआईटी कोचिंग संस्थान, मितेश राठी क्लासेस में शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस दौरान यहां कोचिंग के समस्त शिक्षकों को सम्मानित किया गया। इस मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में डीजीपी (जेल) संजय चौधरी, कोचिंग के डायरेक्टर जेसी राठी, मितेश राठी, समस्त शिक्षक और संस्थान में पढ़ने वाले

कार्यक्रम सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में शिक्षक दिवस पर किया गया आयोजन

प्राध्यापकों ने साझा किए छात्र जीवन के खट्टे-मीठे अनुभव

प्राध्यापकों ने आंख बंद करके ब्लैक बोर्ड पर लगाया निशाना

रायसेन। नवदुनिया प्रतिनिधि

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में शिक्षक दिवस पर सभी विभागों के छात्रों ने विभिन्न सांस्कृतिक और मनोरंजक कार्यक्रम आयोजित किए। छात्रों ने शिक्षकों के सम्मान के साथ कई छोटे-छोटे इंडोर गेम्स भी आयोजित किए जिनका गुरुजनों ने जमकर लुत्फ उठाया। छात्रों ने शिक्षकों से उनके छात्र जीवन के खट्टे-मीठे अनुभव भी सुने। टीचरों ने ब्लैक बोर्ड पर आंख बंद कर निशाना बनाना, पानी भरे कटोरे में प्लास्टिक की बॉल फेंकने और चम्मच रेस का भी मजा लूटा। शिक्षक दिवस पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव अदिति कुमार त्रिपाठी ने छात्रों को आत्मानुशासित बनने की सीख दी। उन्होने कहा कि सांची विश्वविद्यालय का उद्देश्य विश्व के समस्त दर्शनों का भारतीय परिप्रेक्ष्य में अध्ययन कराना है चाहे वो ईसाई दर्शन हो, इस्लाम का दर्शन हो, यहूदी दर्शन हो या फिर कोई भी वैश्विक दर्शन।

रायसेन। सांची विश्वविद्यालय में शिक्षक दिवस समारोह हुआ। ● नवदुनिया

श्री त्रिपाठी ने कहा कि विद्या अभ्यास से आती है और विश्वविद्यालय के छात्र, शिक्षक, कर्मचारी मिलकर अपने आत्मानुशासन और अध्ययन से विश्वविद्यालय को विश्वस्तरीय बनाएंगे। योग विभाग के छात्रों द्वारा एक माइम प्रस्तुति में दर्शाया गया कि कैसे बिगड़े हुए छात्र अपने छात्र जीवन में शिक्षक की बातें नहीं मानते और भविष्य में सफल नहीं हो पाते और शराबी बन जाते हैं। छात्रा नेहा सैनी द्वारा एक डॉक्यूमेंट्री भी प्रस्तुत की गई। सहायक प्राध्यापक डॉ नवीन दीक्षित ने डॉ. राधाकृष्णन द्वारा दर्शन के क्षेत्र में किए गए कार्यों के विषय में बताया। डीन डॉ नवीन मेहता ने अपने बॉलीवुड फिल्म के लिए स्वयं द्वारा लिखे एक गीत की कुछ पंक्तियों को प्रस्तुत किया।

जिलेभर में गुरुओं के सम्मान में हुए आयोजन, शिष्यों ने किया सम्मान

सम्मान से नहीं, शिष्य की सफलता से प्रसन्न होते हैं गुरुः शिवराज

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

रायसेन/मंडीदीप. गुरु किसी सम्मान का भूख नहीं होता है और न वह सम्मान से खुश होता है। गुरु सही मायने में तब खुश होता है जब उनके शिष्य जीवन में अपेक्षित मुकाम हासिल कर गुरु का नाम रोशन करते हैं। यह बात गुरुवार को प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने नगर की सामाजिक संस्था अभय ज्ञान जन समिति द्वारा आयोजित शिक्षक सम्मान कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कही। चौहान ने कहा कि शिक्षक हमारे जीवन में एक ऐसे व्यक्ति हैं जो स्वयं जलते हैं और हमें रोशनी प्रदान करते हैं, वे अपने छात्रों को एक अच्छा इंसान बनाने के लिए भरपूर प्रयास करते हैं, शिक्षकों का कभी भी धन्यवाद नहीं किया जा सकता। क्योंकि उनके उपकारों का कर्ज हम विद्यार्थी कभी भी अदा नहीं कर सकते।

समिति द्वारा नगर लगातार 27वें वर्ष आयोजित इस शिक्षक सम्मान समारोह में शिक्षकों के साथ समाज, शिक्षा, खेल एवं अन्य क्षेत्र में काम करने वाली प्रतिभाओं का भी सम्मान किया गया। कार्यक्रम में पूर्व मंत्री सुरेन्द्र पटवा, नपा अध्यक्ष बद्री सिंह चौहान तथा सेवा समिति के अध्यक्ष जीवन सिंह पाल आदि मौजूद थे। अतिथियों ने विभिन्न संस्थाओं के करीब डेढ़ हजार शिक्षक, शिक्षिकाओं को सम्मानित किया।

मंडीदीप. पूर्व मुख्यमंत्री ने किया सम्मान।

सांची युनिवर्सिटी में हुए आयोजन

छात्र जीवन के खट्टे-मीठे अनुभव किए साझा

सांची बौद्ध, भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में शिक्षक दिवस पर सभी विभागों के छात्रों ने विभिन्न सांस्कृतिक और मनोरंजक कार्यर्क्रम आयोजित किए। छात्रों ने शिक्षकों के सम्मान के साथ कई इंडोर गेम्स भी आयोजित किए। जिनका गुरुजनों ने जमकर लुत्फ उठाया। छात्रों ने शिक्षकों से उनके छात्र जीवन के खट्टे-मीठे अनुभव भी सुने। कुलसचिव अदिति कुमार त्रिपाठी ने छात्रों को आत्मानुशासित बनने की सीख दी। उन्होंने कहा कि सांची विश्वविद्यालय का उद्देश्य विश्व के समस्त दर्शनों का भारतीय परिप्रेक्ष्य में अध्ययन कराना है।

रायसेन. सम्मान समारोह में मौजूद शिक्षक और छात्र।

श्रीमद्भागवत गीता देकर किया सम्मान

रायसेन के शासकीय विवेकानंद कॉलेज में आयोजित कार्यक्रम में कॉलेज के विद्यार्थियों ने प्रोफेसरों, लेक्चरर का सम्मान धार्मिक ग्रंथ भागवत गीता देकर किया। इस अवसर पर कॉलेज प्राचार्य डॉ. इशरत खान, प्रोफेसर डॉ. क्रांति पवार, डॉ. शीला रावत, अनिल भार्गव, दिनेश सिंह, विद्यार्थी परिषद के जिला संयोजक शुभम उपाध्याय, हिमाद्री गोस्वामी, वरुण खत्री, शुभम नामदेव, शुभम कुशवाह, सन्नी खत्री, अभिषेक भार्गव, तन्मय यादव आदि उपस्थित थे।

जिला स्तरीय समारोह में किया सम्मान

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

सांची. जिला स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह सांची के होटल संबोधी इंटरनेशनल में किया गया। जिसमें कलेक्टर उमा शंकर भार्गव, जनपद अध्यक्ष एस मुनीयन, कांग्रेस के मंडल अध्यक्ष प्रदीप दीक्षित, जिला शिक्षा अधिकारी आलोक खरे, समाजसेवी सुनील जैन उपस्थित थे। कार्यर्क्रम में 120 सेवानिवृत्त एवं उत्कृष्ट कार्य करने वाले शिक्षकों का सम्मान किया गया।

इस मौके पर कलेक्टर ने कहा मैं शिक्षक रहा हूं, अतः शिक्षकों के कार्य से परिचित हूं। शिक्षकों की समस्याएं समझता हूं, इसलिए आज से ही ब्लॉक स्तर पर शिक्षक समस्या निवारण शिविर शुय किया जा रहा है।

ज्ञानदीप स्कूल में मनाया शिक्षक दिवस

चंदन पिपरिया. हाई स्कूल चंदन पिपरिया के शिक्षकों एवं बच्चों ने शिक्षक दिवस को बड़े हर्ष एवं धूमधाम से मनाया। इसी दिन पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें बच्चों में भाग लिया। प्राचार्य कमलेश कुमार लोधी ने डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जीवन पर प्रकाश डाला एवं शिक्षा के महत्व को बताया।

Teacher's day celebration at Sanchi University with lemon race

By - TNN | Farzana Patowari | Created: Sep 6, 2019, 13:44 IST

To mark the birthday of the former president of India, **Sarvepalli Radhakrishnan** which is also known as the teacher's day the students of the **Sanchi University** organised an array of activities to show their love towards them. The day started with cultural events which included various electric dance and singing performances by the students on hit **Bollywood** numbers. The students also presented a play on Pariksha Ho Gayi and lastly they organised a series of indoor games like lemon race and putting a thread in the needle. The dean of the institute Dr Naveen Mehta sung a few lines of his Bollywood film's song for the teachers and students.

End of the article

जागरण Lake सिटी

6 सितंबर, 2019 www.jagranmp.com/epaper

प्राध्यापकों ने की चम्मच दौड़, सुई में डाला धागा

● जागरण सिटी रिपोर्टर ●

सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में शिक्षक दिवस पर सभी विभागों के छात्रों ने विभिन्न सांस्कृतिक और मनोरंजक कार्यक्रम आयोजित किए। छात्रों ने शिक्षकों के सम्मान के साथ कई छोटे-छोटे इंडोर गेम्स भी आयोजित किए, जिनका गुरुजनों ने जमकर लुत्फ उठाया। छात्रों ने शिक्षकों से उनके छात्र जीवन के खट्टे-मीठे अनुभव भी सुने। टीचरों ने ब्लैक बोर्ड पर आंख बंद कर निशाना बनाना, पानी भरे कटोरे में प्लास्टिक की बॉल फेंकने और चम्मच रेस का भी मजा लूटा। शिक्षक दिवस पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव अदिति कुमार त्रिपाठी ने छात्रों को आत्मानुशासित बनने की सीख दी। उन्होंने कहा कि सांची विश्वविद्यालय का उद्देश्य विश्व के समस्त दर्शनों का भारतीय परिप्रेक्ष्य में अध्ययन कराना है, चाहे वो ईसाई दर्शन हो, इस्लाम का दर्शन हो, यहूदी दर्शन हो या फिर कोई भी वैश्विक दर्शन। श्री त्रिपाठी ने कहा कि विद्या अभ्यास से आती है और विश्वविद्यालय के छात्र, शिक्षक, कर्मचारी मिलकर अपने आत्मानुशासन और अध्ययन से विश्वविद्यालय को विश्वस्तरीय बनाएंगे।

सांची विश्व विद्यालय में शिक्षक दिवस समारोह

'परीक्षा हो गई' पर दी मूक नाट्य प्रस्तुति

छात्रों ने 'परीक्षा हो गई' विषय पर एक मूक नाट्य प्रस्तुति भी दी जिसे सबने खूब सराहा। नकल को हास्य के अंदाज में प्रदर्शित करती प्रस्तुति पर सभी ने जमकर तालियां बजाईं। कई शिक्षकों ने अपनी गायन प्रतिभा को भी मंच पर प्रस्तुत किया। कुछ छात्राओं ने अपनी स्वयं द्वारा लिखित कविताएं भी मंच पर प्रस्तुत कीं। योग विभाग के छात्रों द्वारा एक माइम प्रस्तुति में दर्शाया गया कि कैसे बिगड़े हुए छात्र अपने छात्र जीवन में शिक्षक की बातें नहीं मानते और भविष्य में सफल नहीं हो पाते और शराबी बन जाते हैं। छात्रा नेहा सैनी द्वारा एक डॉक्यूमेंट्री भी प्रस्तुत की गई। भारतीय दर्शन विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. नवीन दीक्षित ने डॉ. राधाकृष्णन द्वारा दर्शन के क्षेत्र में किए गए कार्यों के विषय में बताया। डीन डॉ. नवीन मेहता ने अपने बॉलीवुड फिल्म के लिए स्वयं द्वारा लिखे एक गीत की कुछ पंक्तियों को प्रस्तुत किया।

<u>प्रेस विज्ञप्ति</u>

मुक्तिबोध, धूमिल और नागार्जुन के माध्यम से लोकतंत्र का ज़िक्र, सांची विवि में व्याख्यान

- सांची बौद्ध भारतीय-ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में विशिष्ट व्याख्यान
- हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय की हिंदी की प्रो. चंदा बेन का व्याख्यान
- कविताओं के माध्यम से समझाया ड प्रजातंत्र का वास्तविक अर्थ

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में डॉ. हरि सिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय,सागर की हिंदी विभाग की प्रोफेसर चंदा बेन का विशेष व्याख्यान हुआ। रायसेन के बारला अकादमिक परिसर में "समकालीन कविता और लोकतंत्र" विषय पर उन्होंने 1960 के बाद की कविताओं के दौर का ज़िक्र किया। रघुवीर सहाय, नागार्जुन, धूमिल, भवानी प्रसाद मिश्र, माखनलाल चतुर्वेदी और मुक्तिबोध का विशेष रूप से ज़िक्र किया और इन कवियों की कविताओं के माध्यम से लोकतंत्र का वास्तविक अर्थ बताया।

उन्होंने कहा कि उस दौर के साहित्यकार अपनी तात्कालिक परिस्थितियों जैसे- आपातकाल और स्वतंत्रता युगीन चेतना का ज़िक्र कर रहे थे। उन्होने बताया कि एक दौर में माखनलाल चतुर्वेदी स्वतंत्रता चेतना से परिपूर्ण कविताएं लिख रहे थे, जबकि 1962 के बाद उनकी कविताओं का भाव उलाहनावादी हो गया था।

सांची विश्वविद्यालय के पी.एच.डी, एम. फिल और एमए छात्रों से प्रो. चंदा बेन ने मुक्तिबोध के बारे में बताया। उन्होने दलील दी कि मुक्तिबोध की रचना प्रजातंत्र के सही मायनों को समझाते हुए चलती है और मुक्तिबोध का कहना था कि पूंजीवाद मनुष्य का भला उस तरह से नहीं कर सकता जिस तरह से मनुष्य की भलाई होनी चाहिए।

उन्होंने छात्रों को बताया कि "भूल-गलती" कविता के माध्यम से मुक्तिबोध ने उस समय के प्रजातंत्र की सच्चाई को दिखाने का प्रयास किया था। उनका कहना था कि कवि नागार्जुन भारतीय प्रजातंत्र और आपातकाल के बीच की कड़ियों को अपनी कविता का विषय वस्तु बनाते थे। "वरूण के बेटे", "रतिनाथ की चाची" आपातकालीन दौर की कालजयी कविताएं हैं।

पत्रिका PLUS BHOPAL, WEDNESDAY 25/09/2019 { 14

सांची विवि में व्याख्यान का आयोजन

प्रजातंत्र का अर्थ कविताओं के माध्यम से समझाया

भोपाल ◆ सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में डॉ. हरि सिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय की हिंदी विभाग की प्रो. चंदा बेन का विशेष व्याख्यान हुआ। उन्होंने समकालीन कविता और लोकतंत्र विषय पर 1960 के बाद की कविताओं का जिक्र किया। रघुवीर सहाय, नागार्जुन, धूमिल, भवानी प्रसाद मिश्र, माखनलाल चतुर्वेदी और मुक्तिबोध का विशेष रूप से जिक्र किया और इन कवियों की कविताओं के माध्यम से लोकतंत्र का वास्तविक अर्थ बताया। उन्होंने कहा कि उस दौर के साहित्यकार अपनी तात्कालिक परिस्थितियों जैसे आपातकाल और स्वतंत्रता युगीन चेतना का जिक्र कर रहे थे। एक दौर में माखनलाल चतुर्वेदी स्वतंत्रता चेतना से परिपूर्ण कविताएं लिख रहे थे, जबकि 1962 के बाद उनकी कविताओं का भाव उलाहनावादी हो गया था। सांची विश्वविद्यालय के पीएचडी, एमफिल और एमए छात्रों से प्रो. चंदा बेन ने मुक्तिबोध के बारे में बताया।

आप पढ़ रहे हैं देश का सबसे विश्वसनीय और नंबर 1 अखबार

दैनिक भास्कर

कुल पेज 28, 20 पेज + 8 मधुरिमा के साथ, मूल्य ₹ 6.00 वर्ष 63, अंक 43, महानगर

भोपाल, बुधवार 25 सितंबर, 2019 आश्विन कृष्ण पक्ष - 11, 2076

आयोजन कविताओं के माध्यम से समझाया प्रजातंत्र का वास्तविक अर्थ

सांची बौद्ध भारतीय-ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में हुआ विशिष्ट व्याख्यान

रायसेन। मंगलवार को रायसेन के बारला अकादमिक परिसर में समकालीन कविता और लोकतंत्र विषय पर कार्यक्रम में कविताओं का ज़िक्र किया। सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के बारला अकादमिक रिसर में डॉ.हरि सिंह गौर केंद्रीय श्वविद्यालय,सागर की हिंदी विभाग की फेसर चंदा बेन का विशेष व्याख्यान किया। कविता और लोकतंत्र विषय पर उन्होंने 60 के बाद की कविताओं के बिषय में ाया वही रघुवीर सहाय, नागार्जुन, धूमिल, ानी प्रसाद मिश्र, माखनलाल चतुर्वेदी मुक्तिबोध का विशेष रूप से ज़िक्र ा और इन कवियों की कविताओं के ाम से लोकतंत्र का वास्तविक अर्थ ा। उन्होंने कहा कि उस दौर के यकार अपनी तात्कालिक परिस्थितियों आपातकाल और स्वतंत्रता युगीन का जिक्र कर रहे थे। उन्होने बताया

कि एक दौर में माखनलाल चतुर्वेदी स्वतंत्रता चेतना से परिपूर्ण कविताएं लिख रहे थे, जबकि 1962 के बाद उनकी कविताओं का भाव उलाहनावादी हो गया था।

कवि नागार्जुन भारतीय प्रजातंत्र

सांची विश्वविद्यालय के पी.एचडी एम फिल और एमए छात्रों से प्रो.चंदा बेन ने मुक्तिबोध के बारे में बताया। उन्होने दलील दी कि मुक्तिबोध की रचना प्रजातंत्र के सही मायनों को समझाते हुए चलती है और मुक्तिबोध का कहना था कि पूंजीवाद मनुष्य का भला उस तरह से नहीं कर सकता जिस तरह से मनुष्य की भलाई होनी चाहिए। उन्होंने छात्रों को बताया कि भूल-गलती कविता के माध्यम से मुक्तिबोध ने उस समय के प्रजातंत्र की सच्चाई को दिखाने का प्रयास किया था। उनका कहना था कि कवि नागार्जुन भारतीय प्रजातंत्र और आपातकाल के बीच की कड़ियों को अपनी कविता का विषय वस्तु बनाते थे। बस्ता बेटे श्रतिनाथ की चाची, आपातकालीन दौर की कालजयी कविताएं हैं।

नवदुनिया 13
भोपाल, बुधवार 25 सितंबर 2019

सिरोंज - विदिशा

कविताओं के माध्यम से बताया लोकतंत्र का वास्तविक अर्थ

रायसेन। नवदुनिया प्रतिनिधि

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में डॉ. हरि सिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय सागर की हिंदी विभाग की प्रोफेसर चंदा बेन का विशेष व्याख्यान हुआ।

बारला अकादमिक परिसर में समकालीन कविता और लोकतंत्र विषय पर उन्होंने 1960 के बाद की कविताओं के दौर का जिक्र किया। रघुवीर सहाय, नागार्जुन, धूमिल, भवानी प्रसाद मिश्र, माखनलाल चतुर्वेदी और मुक्तिबोध का विशेष रुप से जिक्र किया और इन कवियों की कविताओं के माध्यम से लोकतंत्र का वास्तविक अर्थ बताया। उन्होंने कहा कि उस दौर के साहित्यकार अपनी तात्कालिक परिस्थितियों जैसे- आपातकाल और स्वतंत्रता युगीन चेतना का जिक्र कर रहे थे। उन्होंने बताया कि एक दौर में माखनलाल चतुर्वेदी स्वतंत्रता चेतना से परिपूर्ण कविताएं लिख रहे थे, जबकि 1962 के बाद उनकी कविताओं का भाव उलाहनावादी हो गया था। सांची विश्वविद्यालय के पीएचडी, एम फिल और एमए छात्रों से प्रो. चंदा बेन ने मुक्तिबोध के बारे में बताया। उन्होंने दलील दी कि मुक्तिबोध की रचना प्रजातंत्र के सही मायनों को समझाते हुए चलती है और मुक्तिबोध का कहना था कि पूंजीवाद मनुष्य का भला उस तरह से नहीं कर सकता जिस तरह से मनुष्य की भलाई होनी चाहिए। उन्होंने छात्रों को बताया कि भूल-गलती कविता के माध्यम से मुक्तिबोध ने उस समय के प्रजातंत्र की सच्चाई को दिखाने का प्रयास किया था। उनका कहना था कि कवि नागार्जुन भारतीय प्रजातंत्र और आपातकाल के बीच की कड़ियों को अपनी कविता का विषय वस्तु बनाते थे।

पत्रिका . बुधवार, 25 सितम्बर, 2019
patrika.com

सांची विवि में व्याख्यान

कविताओं के माध्यम से समझाया प्रजातंत्र का अर्थ

सांची बौद्ध भारतीय-ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में व्याख्यान का आयोजन

रायसेन. विद्यार्थियों से किया संवाद।

रायसेन. सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में डॉ. हरि सिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय सागर की हिंदी विभाग की प्रोफेसर चंदा बेन का विशेष व्याख्यान हुआ। रायसेन के बारला अकादमिक परिसर में समकालीन कविता और लोकतंत्र विषय पर उन्होंने 1960 के बाद की कविताओं के दौर का जिक्र किया। रघुवीर सहाय, नागार्जुन, धूमिल, भवानी प्रसाद मिश्र, माखनलाल चतुर्वेदी और मुक्तिबोध का विशेष रूप से जिक्र किया और इन कवियों की कविताओं के माध्यम से लोकतंत्र का वास्तविक अर्थ बताया।

स्वतंत्रता युगीन चेतना का जिक्र किया

इस अवसर पर उन्होंने कहा कि 'उस दौर के साहित्यकार अपनी तात्कालिक परिस्थितियों जैस आपातकाल और स्वतंत्रता युगीन चेतना का जिक्र कर रहे थे। एक दौर में माखनलाल चतुर्वेदी स्वतंत्रता चेतना से परिपूर्ण कविताएं लिख रहे थे, जबकि 1962 के बाद उनकी कविताओं का भाव उलाहनावादी हो गया था। इसके साथ ही उन्होंने सांची विश्वविद्यालय के पीएचडी, एमफिल और एमए छात्रों को मुक्तिबोध के बारे में भी बताया।

कवियों की रचनाओं पर भी चर्चा

उन्होंने कहा कि मुक्तिबोध की रचना प्रजातंत्र के सही मायनों को समझाते हुए चलती है। मुक्तिबोध का कहना था कि पूंजीवाद मनुष्य का भला उस तरह से नहीं कर सकता जिस तरह से मनुष्य की भलाई होनी चाहिए। उन्होंने छात्रों को बताया कि भूल-गलती, कविता के माध्यम से मुक्तिबोध ने उस समय के प्रजातंत्र की सच्चाई को दिखाने का प्रयास किया था। कवि नागार्जुन भारतीय प्रजातंत्र और आपातकाल के बीच की कड़ियों को अपनी कविता का विषय वस्तु बनाते थे।

मुक्तिबोध,धूमिल और नागार्जुन के माध्यम से लोकतंत्र का ज़िक्र, सांची विश्व विद्यालय में व्याख्या

By India City News, 24 September, 2019, 18:00

- सांची बौद्ध भारतीय-ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में विशिष्ट व्याख्यान
- हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय की हिंदी की प्रो. चंदा बेन का व्याख्यान
- कविताओं के माध्यम से समझाया ड प्रजातंत्र का वास्तविक अर्थ

indiacitynews. com

रायसेन। सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में डॉ. हरि सिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय,सागर की हिंदी विभाग की प्रोफेसर चंदा बेन का विशेष व्याख्यान हुआ। रायसेन के बारला अकादमिक परिसर में "समकालीन कविता और लोकतंत्र" विषय पर उन्होंने 1960 के बाद की कविताओं के दौर का ज़िक्र किया। रघुवीर सहाय, नागार्जुन, धूमिल, भवानी प्रसाद मिश्र, माखनलाल चतुर्वेदी और मुक्तिबोध का विशेष रूप से ज़िक्र किया और इन कवियों की कविताओं के माध्यम से लोकतंत्र का वास्तविक अर्थ बताया।

उन्होंने कहा कि उस दौर के साहित्यकार अपनी तात्कालिक परिस्थितियों जैसे- आपातकाल और स्वतंत्रता युगीन चेतना का ज़िक्र कर रहे थे। उन्होने बताया कि एक दौर में माखनलाल चतुर्वेदी स्वतंत्रता चेतना से परिपूर्ण कविताएं लिख रहे थे, जबकि 1962 के बाद उनकी कविताओं का भाव उलाहनावादी हो गया था।

सांची विश्वविद्यालय के पी.एच.डी, एम. फिल और एमए छात्रों से प्रो. चंदा बेन ने मुक्तिबोध के बारे में बताया। उन्होने दलील दी कि मुक्तिबोध की रचना प्रजातंत्र के सही मायनों को समझाते हुए चलती है और मुक्तिबोध का कहना था कि पूंजीवाद मनुष्य का भला उस तरह से नहीं कर सकता जिस तरह से मनुष्य की भलाई होनी चाहिए।

उन्होंने छात्रों को बताया कि "भूल-गलती" कविता के माध्यम से मुक्तिबोध ने उस समय के प्रजातंत्र की सच्चाई को दिखाने का प्रयास किया था। उनका कहना था कि कवि नागार्जुन भारतीय प्रजातंत्र और आपातकाल के बीच की कड़ियों को अपनी कविता का विषय वस्तु बनाते थे। "वरूण के बेटे", "रतिनाथ की चाची" आपातकालीन दौर की कालजयी कविताएं हैं।

Source ¦¦ जनसम्पर्क शाखा साँची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय, भोपाल

<u>प्रेस विज्ञप्ति</u>

गांधी जी की वीं वर्षगांठ पर आयोजन150

‘परिस्थियों से सीखते और सत्य को स्वीकारते थे गांधी’

- **सांची बौद्ध विश्वविद्यालय में महात्मा गांधी पर विशेष व्याख्यान**
- **"आज भी प्रासंगिक हैं गांधी"**
- **वरिष्ठ साहित्यकार गोविंद मिश्र ने की छात्रों से परिचर्चा**
- **“स्वयं का साक्षात्कार करें तभी सफल होंगे”**
- **“अपने प्रति पूरी तरह ईमानदार थे गांधी जी”**
- **“रेल यात्रा के ज़रिए भारत को खोजा था गांधी ने”**

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं वर्षगांठ के मौके पर सांची बौद्ध- भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में एक विशिष्ट व्याख्यान आयोजित किया गया। गांधीवादी विचारक और साहित्यकार श्री गोविंद मिश्र ने बारला अकादमिक परिसर में दिए गए व्याख्यान में गांधी जी के व्यक्तित्व के कई अनछुए पहलुओं पर प्रकाश डाला। “**भारत के चिरंतन मूल्य और महात्मा गांधी**” विषय पर बोलते हुए श्री गोविंद मिश्र ने गांधी जी के व्यक्तित्व के आलोच्नात्मक पहलुओं पर भी बात की। उन्होंने कहा कि गांधी जी स्वयं के सबसे बड़े आलोचक थे और वे कभी भी अपने को बड़ा विचारक नहीं मानते थे। उनके इस गुण के कारण उनके विरोधियों के लिए भी गांधी जी अपरिहार्य थे। यही वजह है कि पूरा विश्व उन्हें आज भी प्रासंगिक मान रहा है।

उन्होंने कहा कि 23 सितंबर को न्यूयॉर्क में चल रही संयुक्त राष्ट्र “**क्लाइमेट एक्शन समिट**” और अमेरिकी कॉन्ग्रेस में जब साल 16की स्वीडन मूल की लड़की ग्रेटा थनबर्ग ने जलवायु परिवर्तन पर ललकारा औऱ दुनिया के लोगों से पूछा कि उन्हें क्या अधिकार है कि वे पर्यावरण को क्षति पहुंचाकर उसकी उम्र के बच्चों के भविष्य को खतरे में डाल रहे हैं, तब उन्हें गांधी जी याद आए।

श्री गोविंद मिश्र ने बताया कि 1905 में लिखी अपनी पुस्तक “**हिंद स्वराज**” में गांधी जी ने प्रकृति, ग्राम, शहरीकरण का विरोध, पश्चिमीकरण का विरोध इत्यादि पर ज़ोर दिया था। जिसकी अहमियत आज हमें समझ आ रही है जब हमारे शहर रहने लायक नहीं बचे हैं, अत्यधिक गर्मी-बाढ़ हमें नुकसान पहुंचा रही है और पूरे विश्व में प्राकृतिक असंतुलन पैदा हो गया है।

श्री गोविंद मिश्र ने कहा कि गांधी जी सदैव **अपरिगृह** पर ज़ोर देते थे यानी चीज़ों को इकट्ठा न करना। लेकिन आज ऐसा है कि कुछ परिवारों में प्रत्येक सदस्य के पास AC कारें हैं जबकि पूरे परिवार का एक कार से काम चल सकता था। इस तरह से पेट्रोल जलाकर, AC चलाकर प्रकृति को भी नुकसान पहुंचाया गया और अब हम कारों की बिक्री घटने पर भी चिंतित हो रहे हैं।

छात्रों को संबोधित करते हुए श्री गोविंद मिश्र ने कहा कि अगर आप पूरी ईमानदारी से अपना स्वयं का साक्षात्कार करते रहेंगे जिस तरह गांधी जी करते थे तो आप सफल होंगे। उन्होंने कहा कि गांधी जी अपने प्रति पूरी तरह ईमानदार थे।

श्री गोविंद मिश्र ने कहा कि गांधी जी अपनी आत्मकथा में पूरी ईमानदारी से ये स्वीकारते हैं कि पिछले तीस साल के अपने जीवन में(1918 से 1948 तक) वे **स्वानुभूति** के लिए प्रयास करते रहे, **ईश्वर से साक्षात्कार** के लिए आतुर रहे और **मोक्ष** क्या है तलाश करते रहे।

उन्होंने कहा कि गांधी जी के जीवन का अध्ययन यह बताता है कि वे अपने पूरे जीवन विकसित होता व्यक्तित्व थे, वे सीखते रहे, अपना निर्माण करते रहे.....वे कभी भी मूल(original) नहीं रहे यानी परिस्थितियों से सीखते थे, सत्य को स्वीकारते थे और उसे अपने व्यक्तित्व में, अपने जीवन में ढाल लेते थे। उन्होंने भारत के चिरंतन मूल्यों को अपना लिया था।

श्री गोविंद मिश्र का कहना था कि गांधी जी ने हिंदुत्व के सही मूल को सदैव प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि गांधी जी ने आम लोगों के बीच जाकर उस दौर के आम विशुद्ध व्यक्ति से समझा कि वो धर्म को कैसे अपने जीवन में जीता है। श्री गोविंद मिश्र का कहना था कि गांधी जी रामचरित मानस और गीता के सार को अपने जीवन में प्रस्तुत करते थे कि- "**ऐसा कोई भी कार्य न करें जिससे दूसरों को कष्ट हो**" और "**परोपकार से बड़ा कोई धर्म नहीं है**"। उन्होंने कहा कि दक्षिण अफ्रीका से वापिस लौटने के बाद जब गांधी जी ने ट्रेन के ज़रिए पूरे भारत की यात्रा की तो सही मायनों में उन्होंने "**भारत की खोज**" की।

सांची विश्वविद्यालय में आयोजित किए गए इस विशेष व्याख्यान में अंग्रेज़ी विभाग के प्रो. ओ.पी बुधोलिया ने महत्मा गांधी के सहिष्णुता के सिद्धांत का ज़िक्र किया।

अपने विशिष्ट व्याख्यान और परिचर्चा के बाद श्री गोविंद मिश्र ने छात्र-छात्राओं से भेंट की और अपना कहानी संग्रह "प्रतिनिधि कहानियां" उन्हें भेंट की।

आप पढ़ रहे हैं देश का सबसे विश्वसनीय और नंबर 1 अख़बार
दैनिक भास्कर
भोपाल, शुक्रवार 27 सितंबर, 2019

यूएन समिट में ग्रेटा थनबर्ग की ललकार पर सबको याद आए बापू

सांची विवि में गांधीवादी गोविंद मिश्र ने कहा

सिटी रिपोर्टर | 23 सितंबर को न्यूयॉर्क में चल रही संयुक्त राष्ट्र क्लाइमेट एक्शन समिट में जब स्वीडन की 16 वर्षीय लड़की ग्रेटा थनबर्ग ने जलवायु परिवर्तन पर ललकारा और दुनिया के लोगों से पूछा कि उन्हें क्या अधिकार है कि वे पर्यावरण को क्षति पहुंचाकर उसकी उम्र के बच्चों के भविष्य को खतरे में डाल रहे हैं। ग्रेटा थनबर्ग की बात सुनकर समिट में मौजूद सभी लोगों को महात्मा गांधी याद आए, क्योंकि बापू ने 1905 में लिखी अपनी पुस्तक हिंद स्वराज में प्रकृति, ग्राम, शहरीकरण व पश्चिमीकरण के विरोध पर जोर दिया था। इसकी अहमियत आज समझ आ रही है, जब हमारे शहर रहने लायक नहीं बचे हैं और पूरे विश्व में प्राकृतिक असंतुलन पैदा हो गया है। सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विवि में महात्मा गांधी की 150वीं वर्षगांठ के अवसर पर आयोजित व्याख्यान में गांधीवादी विचारक और साहित्यकार गोविंद मिश्र ने गुरुवार को यह विचार रखे। कार्यक्रम में प्रो. ओपी बुधौलिया ने महात्मा गांधी के सहिष्णुता के सिद्धांतों पर विचार रखे।

दैनिक मध्यप्रदेश का तेज़ी से बढ़ता अखबार
स्वतंत्र समय

सांची बौद्ध विश्वविद्यालय में महात्मा गांधी पर विशेष व्याख्यान

गांधी जी को आज पूरा विश्व प्रासंगिक मान रहा है : गोविंद मिश्र

स्वतंत्र समय, रायसेन।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं वर्षगांठ के मौके पर सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में एक विशिष्ट व्याख्यान आयोजित किया गया। गांधीवादी विचारक और साहित्यकार गोविंद मिश्र ने बारला अकादमिक परिसर में दिए गए व्याख्यान में गांधी जी के व्यक्तित्व के कई अनछुए पहलुओं पर प्रकाश डाला। भारत के चिरंतन मूल्य और महात्मा गांधी विषय पर बोलते हुए गोविंद मिश्र ने गांधी जी के व्यक्तित्व के आलोच्नात्मक पहलुओं पर भी बात की। उन्होंने कहा कि गांधी जी स्वयं के सबसे बड़े आलोचक थे और वे कभी भी अपने को बड़ा विचारक नहीं मानते थे। उनके इस गुण के कारण उनके विरोधियों के लिए भी गांधी जी अपरिहार्य थे। यही वजह है कि पूरा विश्व उन्हें आज भी प्रासंगिक मान रहा है।

उन्होंने कहा कि 23 सितंबर को न्यूयॉर्क में चल रही संयुक्त राष्ट्र क्लाइमेट एक्शन समिट और अमेरिकी कॉन्ग्रेस में जब 16 साल की स्वीडन मूल की लड़की ग्रेटा थनबर्ग ने जलवायु परिवर्तन पर ललकारा और दुनिया के लोगों से पूछा कि उन्हें क्या अधिकार है कि वे पर्यावरण को क्षति पहुंचाकर उसकी उम्र के बच्चों के भविष्य को खतरे में डाल रहे हैं, तब उन्हें गांधी जी याद आए। सांची विश्वविद्यालय में आयोजित किए गए इस विशेष व्याख्यान में अंग्रेजी विभाग के प्रो. ओपी बुधौलिया ने महात्मा गांधी के सहिष्णुता के सिद्धांत का जिक्र किया।

ईमानदारी से स्वयं का साक्षात्कार करें

छात्रों को संबोधित करते हुए गोविंद मिश्र ने कहा कि अगर आप पूरी ईमानदारी से अपना स्वयं का साक्षात्कार करते रहेंगे जिस तरह गांधी जी करते थे तो आप सफल होंगे। उन्होंने कहा कि गांधी जी अपने प्रति पूरी तरह ईमानदार थे। श्री गोविंद मिश्र ने कहा कि गांधी जी अपनी आत्मकथा में पूरी ईमानदारी से ये स्वीकारते हैं कि पिछले तीस साल के अपने जीवन में 1918 से 1948 तक वे स्वानुभूति के लिए प्रयास करते रहे, ईश्वर से साक्षात्कार के लिए आतुर रहे और मोक्ष क्या है तलाश करते रहे।

सोशल मीडिया पर आपत्तिजनक मैसेज पोस्ट किए तो होगी कार्यवाही

रायसेन। आगामी त्योहारों को दृष्टिगत रखते हुए कलेक्टर उमाशंकर भार्गव द्वारा सोशल मीडिया जैसे व्हाट्सएप, फेसबुक आदि के माध्यम से आपत्तिजनक संदेश, चित्रों, वीडियों एवं ऑडियो मैसेज पोस्ट करने तथा शेयर करने पर पूर्णतः प्रतिबंध लगाया गया है। जारी आदेश के तहत सोशल मीडिया पर कोई भी व्यक्ति धार्मिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत रूप से आपत्तिजनक संदेश, चित्रों, वीडियो एवं ऑडियो मैसेज प्रकाशित, प्रसारित नहीं करेगा। इस आदेश का उल्लंघन करने पर भादविसं की धारा 188 के अंतर्गत कार्यवाही की जाएगी। उल्लेखनीय है कि असामाजिक तत्वों द्वारा सोशल मीडिया जैसे व्हाट्सएप, फेसबुक आदि के माध्यम से सामाजिक ताने-बाने को तोड़ने एवं विभिन्न समुदायों के मध्य संघर्ष, वैमनस्यता की स्थिति निर्मित करने के लिए विभिन्न प्रकार के आपत्तिजनक संदेश, चित्रों, वीडियो तथा ऑडियो मैसेज को प्रकाशित, प्रसारित कर वैमनस्यता का वातावरण निर्मित न किया जा सके।

रायसेन पत्रिका

पत्रिका . शुक्रवार, 27 सितम्बर, 2019

विशेष व्याख्यान

परिस्थियों से सीखते और सत्य को स्वीकारते थे गांधीजी

सांची बौद्ध विवि में महात्मा गांधी पर विशेष व्याख्यान का आयोजन

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

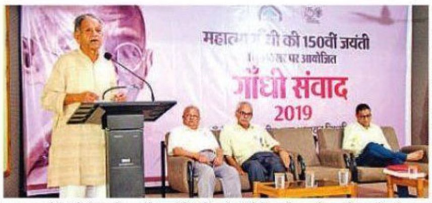

रायसेन. सांची बौद्ध विवि में महात्मा गांधी पर विशेष व्याख्यान में वक्ताओं ने दिया व्याख्यान।

रायसेन. राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं वर्षगांठ के मौके पर सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में एक विशिष्ट व्याख्यान आयोजित किया गया।

गांधीवादी विचारक और साहित्यकार गोविंद मिश्र ने बारला अकादमिक परिसर में दिए गए व्याख्यान में गांधी के व्यक्तित्व के कई अनछुए पहलुओं पर प्रकाश डाला। भारत के चिरंतन मूल्य और महात्मा गांधी विषय पर बोलते हुए गोविंद मिश्र ने गांधी के व्यक्तित्व के आलोचनात्मक पहलुओं पर भी बात की। उन्होंने कहा कि गांधी स्वयं के सबसे बड़े आलोचक थे और वे कभी भी अपने को बड़ा विचारक नहीं मानते थे। उनके इस गुण के कारण उनके विरोधियों के लिए भी गांधी जी अपरिहार्य थे। यही वजह है कि पूरा विश्व उन्हें आज भी प्रासंगिक मान रहा है। उन्होंने कहा कि 23 सितंबर को न्यूयॉर्क में चल रही संयुक्त राष्ट्र क्लाइमेट एक्शन समिट और अमेरिकी कांग्रेस में जब 16 साल की स्वीडन मूल की लड़की ग्रेटा थनबर्ग ने जलवायु परिवर्तन पर ललकारा और दुनिया के लोगों से पूछा कि उन्हें क्या अधिकार है कि वे पर्यावरण को क्षति पहुंचाकर उसकी उम्र के बच्चों के भविष्य को खतरे में डाल रहे हैं, तब उन्हें गांधी जी याद आए।

मिश्र ने कहा कि गांधी जी सदैव अपरिगृह पर जोर देते थे, यानी चीजों को इकट्ठा न करना। मिश्र ने कहा कि अगर आप पूरी ईमानदारी से अपना स्वयं का साक्षात्कार करते रहेंगे, जिस तरह गांधी जी करते थे तो आप सफल होंगे। गांधी का जीवन यह बताता है कि वे अपने पूरे जीवन विकसित होता व्यक्तित्व थे, वे सीखते रहे, अपना निर्माण करते रहे।

छात्राओं से भेंट की

इस विशेष व्याख्यान में अंग्रेजी विभाग के प्रो. ओपी बुधोलिया ने महत्मा गांधी के सहिष्णुता के सिद्धांत का जिक्र किया। विशिष्ट व्याख्यान और परिचर्चा के बाद मिश्र ने छात्र-छात्राओं से भेंट की और अपना कहानी संग्रह प्रतिनिधि कहानियां उन्हें भेंट की।

16 नवदुनिया

भोपाल, शुक्रवार 27 सितंबर 2019

रायसेन जिला

सदा परिस्थियों से सीखते और सत्य को स्वीकारते थे गांधीजी : गोविंद मिश्र

रायसेन। नवदुनिया प्रतिनिधि

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं वर्षगांठ के मौके पर सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में एक विशिष्ट व्याख्यान आयोजित किया गया। गांधीवादी विचारक और साहित्यकार गोविंद मिश्र ने बारला अकादमिक परिसर में दिए गए व्याख्यान में गांधी के व्यक्तित्व के कई अनछुए पहलुओं पर प्रकाश डाला। भारत के चिरंतन मूल्य और महात्मा गांधी विषय पर बोलते हुए गोविंद मिश्र ने गांधी के व्यक्तित्व के आलोत्नात्मक पहलुओं पर भी बात की। उन्होंने कहा कि गांधी जी स्वयं के सबसे बड़े आलोचक थे और वे कभी भी अपने को बड़ा विचारक नहीं मानते थे। उनके इस गुण के कारण उनके विरोधियों के लिए भी गांधी अपरिहार्य थे। यही वजह है कि पूरा विश्व उन्हें आज भी प्रासंगिक मान रहा है। उन्होंने कहा कि 23 सितंबर को न्यूयॉर्क में चल रही संयुक्त राष्ट्र क्लाइमेट एक्शन समिट और अमेरिकी कांग्रेस में जब 16 साल की स्वीडन मूल की लड़की ग्रेटा थनबर्ग ने जलवायु परिवर्तन पर ललकारा और दुनिया के लोगों से पूछा कि उन्हें क्या अधिकार है कि वे पर्यावरण को क्षति पहुंचाकर उसकी उम्र के बच्चों के भविष्य को खतरे में डाल रहे हैं, तब उन्हें गांधी जी याद आए। गोविंद मिश्र ने बताया कि 1905 में लिखी अपनी पुस्तक हिंद स्वराज में गांधी ने प्रकृति, ग्राम, शहरीकरण का विरोध, पश्चिमीकरण का विरोध इत्यादि पर जोर दिया था। जिसकी अहमियत आज हमें समझ आ रही है जब हमारे शहर रहने लायक नहीं बचे हैं, अत्यधिक गर्मी-बाढ़ हमें नुकसान पहुंचा रही है और पूरे विश्व में प्राकृतिक असंतुलन पैदा हो गया है। गोविंद मिश्र का कहना था कि गांधी जी ने हिंदुत्व के सही मूल को सदैव प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि गांधी जी ने आम लोगों के बीच जाकर उस दौर के आम विशुद्ध व्यक्ति से समझा कि वो धर्म को कैसे अपने जीवन में जीता है। सांची विश्वविद्यालय में आयोजित किए गए इस विशेष व्याख्यान में अंग्रेजी विभाग के प्रो. ओपी बुधोलिया ने महत्मा गांधी के सहिष्णुता के सिद्धांत का जिक्र किया।

सांची बौद्ध विश्वविद्यालय में महात्मा गांधी पर विशेष व्याख्यान। ● नवदुनिया

बदलते जमाने का अखबार
पीपुल्स समाचार
स्थापना वर्ष 2009
रायसेन-विदिशा-आसपास
भोपाल, शुक्रवार 27 सितंबर 2019 05

सांची बौद्ध विश्वविद्यालय में गांधीवादी विचारक गोविंद मिश्र ने गांधी पर दिया विशेष व्याख्यान

परिस्थियों से सीखते, सत्य स्वीकारते थे महात्मा गांधी

पीपुल्स संवाददाता • रायसेन
मो.नं. 9826567067

सांची बौद्ध विश्वविद्यालय में आयोजित व्याख्यान में बोलते हुए गांधीवादी विचारक गोविंद मिश्रा।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं वर्षगांठ पर सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में एक विशिष्ट व्याख्यान आयोजित किया। गांधीवादी विचारक और साहित्यकार गोविंद मिश्र ने बारला अकादमिक परिसर में व्याख्यान में गांधी व्यक्तित्व के अनछुए पहलुओं पर प्रकाश डाला।

भारत के चिरंतन मूल्य और गांधी विषय पर बोलते हुए मिश्र ने गांधी के व्यक्तित्व के आलोचनात्मक पहलुओं पर भी बात की। उन्होंने कहा कि गांधी स्वयं के सबसे बड़े आलोचक थे और वे कभी भी बड़ा विचारक नहीं मानते थे। इस गुण के कारण वे विरोधियों के लिए भी अपरिहार्य थे। यही वजह है कि विश्व उन्हें आज भी प्रासंगिक मान रहा है। 23 सितंबर को न्यूयॉर्क में चल रही संयुक्त राष्ट्र क्लाइमेट एक्शन समिट और अमेरिकी कांग्रेस में जब 16 साल की स्वीडन मूल की लड़की ग्रेटा थनबर्ग ने जलवायु परिवर्तन पर ललकारा और दुनिया के लोगों से पूछा कि क्या अधिकार है कि वे पर्यावरण को क्षति कर उसकी उम्र के बच्चों के भविष्य को खतरे में डाल रहे हैं। तब उन्हें गांधी याद आए। मिश्र ने बताया कि 1905 में लिखी पुस्तक हिंद स्वराज में गांधी ने प्रकृति, ग्राम, शहरीकरण का विरोध, पश्चिमीकरण का विरोध इत्यादि पर जोर दिया था। इसकी अहमियत आज समझ आ रही है, जब हमारे शहर रहने लायक नहीं बचे हैं। अत्यधिक गर्मी-बाढ़ नुकसान पहुंचा रही है और विश्व में प्राकृतिक असंतुलन पैदा हो गया है। गोविंद मिश्र ने कहा कि गांधी सदैव अपरिगृह पर जोर देते थे यानी चीजों को इकट्ठा न करना। लेकिन आज ऐसा है कि कुछ परिवारों में प्रत्येक सदस्य के पास कारें हैं, जबकि पूरे परिवार का एक कार से काम चल सकता था। पेट्रोल जला कर प्रकृति को भी नुकसान पहुंचाया और अब कारों की बिक्री घटने पर भी चिंतित हैं। छात्रों को संबोधित करते हुए गोविंद मिश्र ने कहा कि अगर आप पूरी ईमानदारी से स्वयं का साक्षात्कार करते रहेंगे जिस तरह गांधी करते थे तो आप सफल होंगे। गांधी ईमानदार थे। गांधी अपनी आत्मकथा में ईमानदारी से ये स्वीकारते हैं कि तीस साल के जीवन में (1918 से 1948 तक) वे स्वानुभूति के प्रयास करते रहे, ईश्वर से साक्षात्कार के लिए आतुर रहे और मोक्ष तलाशते रहे। गांधी के जीवन का अध्ययन कर बताता है कि वे अपने पूरे जीवन विकसित होता व्यक्तित्व थे। वे सीखते रहे, निर्माण करते रहे। वे कभी भी मूल नहीं रहे। यानी परिस्थितियों से सीखते थे, सत्य को स्वीकारते थे और उसे अपने व्यक्तित्व में, अपने जीवन में ढाल लेते थे।

राष्ट्रीय हिन्दी मेल
भोपाल, शुक्रवार 27 सितंबर 2019

परिस्थितियों से सीखते और सत्य को स्वीकारते थे गांधी जी

सांची बौद्ध विश्वविद्यालय में महात्मा गांधी पर विशेष व्याख्यान

रायसेन। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं वर्षगांठ के मौके पर सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में एक विशिष्ट व्याख्यान आयोजित किया गया। गांधीवादी विचारक और साहित्यकार गोविंद मिश्र ने बारला अकादमिक परिसर में दिए गए व्याख्यान में गांधी के व्यक्तित्व के कई अनछुए पहलुओं पर प्रकाश डाला।

भारत के चिरंतन मूल्य और महात्मा गांधी विषय पर बोलते हुए गोविंद मिश्र ने गांधी के व्यक्तित्व के आलोचात्मक पहलुओं पर भी बात की। उन्होंने कहा कि गांधी जी स्वयं के सबसे बड़े आलोचक थे और वे कभी भी अपने को बड़ा विचारक नहीं मानते थे। उनके इस गुण के कारण उनके विरोधियों के लिए भी गांधी जी अपरिहार्य थे। यही वजह है कि पूरा विश्व उन्हें आज भी प्रासंगिक मान रहा है। छात्रों को संबोधित करते हुए गोविंद मिश्र ने कहा कि अगर आप पूरी ईमानदारी से अपना स्वयं का साक्षात्कार करते रहेंगे जिस तरह गांधी करते थे तो आप सफल होंगे। उन्होंने कहा कि गांधी अपने प्रति पूरी तरह ईमानदार थे। गोविंद मिश्र ने कहा कि गांधी अपनी आत्मकथा में पूरी ईमानदारी से ये स्वीकारते हैं कि पिछले तीस साल के अपने जीवन में (1918 से 1948 तक) वे स्वानुभूति के लिए प्रयास करते रहे, ईश्वर से साक्षात्कार के लिए आतुर रहे और मोक्ष क्या है तलाश करते रहे। सांची विश्वविद्यालय में आयोजित किए गए इस विशेष व्याख्यान में अंग्रेज़ी विभाग के प्रो. ओ.पी बुधोलिया ने महत्मा गांधी के सहिष्णुता के सिद्धांत का ज़िक्र किया। विशिष्ट व्याख्यान और परिचर्चा के बाद गोविंद मिश्र ने छात्र-छात्राओं से भेंट की और अपना कहानी संग्रह प्रतिनिधि कहानियां उन्हें भेंट की।

दैनिक जागरण

27 सितम्बर 2019

www.jagranmp.com/epaper

परिस्थितियों से सीखते और सत्य को स्वीकारते थे गांधी

रायसेन। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं वर्षगांठ के मौके पर सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में एक विशिष्ट व्याख्यान आयोजित किया गया। गांधीवादी विचारक और साहित्यकार गोविंद मिश्र ने बारला अकादमिक परिसर में दिए गए व्याख्यान में गांधी जी के व्यक्तित्व के कई अनछु पहलुओं पर प्रकाश डाला। भारत के चिरंतन मूल्य और महात्मा गांधी विषय पर बोलते हुए गोविंद मिश्र ने गांधी जी के व्यक्तित्व के आलोचनात्मक पहलुओं पर भी बात की। उन्होंने कहा कि गांधी जी स्वयं के सबसे बड़े आलोचक थे और वे कभी भी अपने को बड़ा विचारक नहीं मानते थे। उनके इस गुण के कारण उनके विरोधियों के लिए भी गांधी जी अपरिहार्य थे। यही वजह है कि पूरा विश्व उन्हें आज भी प्रासंगिक मान रहा है। सांची विश्वविद्यालय में आयोजित किए गए इस विशेष व्याख्यान में अंग्रेज़ी विभाग के प्रो. ओपी बुधोलिया ने महत्मा गांधी के सहिष्णुता के सिद्धांत का जिक्र किया। विशिष्ट व्याख्यान और परिचर्चा के बाद श्री मिश्र ने छात्र-छात्राओं से भेंट की और अपना कहानी संग्रह प्रतिनिधि कहानियां उन्हें भेंट की।

भोपाल हरिभूमि

भोपाल, शुक्रवार 27 सितंबर 2019

गांधीजी अपने आप को बड़ा विचारक नहीं मानते थे: मिश्र

- सांची बौद्ध विवि में महात्मा गांधी पर विशेष व्याख्यान वरिष्ठ साहित्यकार गोविंद मिश्र ने की छात्रों से परिचर्चा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भोपाल

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं वर्षगांठ के मौके पर सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में विशिष्ट व्याख्यान आयोजित किया गया।

गांधीवादी विचारक और साहित्यकार गोविंद मिश्र ने बारला अकादमिक परिसर में गांधी जी के व्यक्तित्व के कई अनछुए पहलुओं पर प्रकाश डाला। 'भारत के चिंतन मूल्य और महात्मा गांधी' विषय पर मिश्र ने गांधीजी के व्यक्तित्व के आलोचनात्मक पहलुओं पर भी बात की। कहा कि गांधीजी स्वयं के सबसे बड़े आलोचक थे और वे कभी भी अपने को बड़ा विचारक नहीं मानते थे। यही वजह है कि पूरा विश्व उन्हें आज भी प्रासंगिक मान रहा है। हिंद स्वराज पुस्तक में गांधीजी ने प्रकृति, ग्राम, शहरीकरण का विरोध, पश्चिमीकरण का विरोध इत्यादि पर जोर दिया था। जिसकी अहमियत आज हमें समझ आ रही है जब हमारे शहर रहने लायक नहीं बचे हैं, पूरे विश्व में प्राकृतिक असंतुलन पैदा हो गया है।

स्टूडेंट को भेंट की प्रतिनिधि कहानियां

गोविंद मिश्र ने कहा कि गांधी जी हमेशा सीखते रहे, अपना निर्माण करते रहे.....वे कभी भी मूल नहीं रहे यानी परिस्थितियों से सीखते थे, सत्य को स्वीकारते थे और उसे अपने व्यक्तित्व में, अपने जीवन में ढाल लेते थे। उन्होंने भारत के चिरंतन मूल्यों को अपना लिया था। अंग्रेजी विभाग के प्रो. ओपी बुधोलिया ने गांधीजी के सहिष्णुता के सिद्धांत का जिक्र किया। गोविंद मिश्र ने छात्र-छात्राओं को अपना कहानी संग्रह प्रतिनिधि कहानियां उन्हें भेंट की।

Prince Media News

The Best WordPress **Magazine** and **Blog** theme
from Theme Freesia
DOWNLOAD NOW

SLIDER खास खबर खास ख़बरें ब्रेकिंग न्यूज़ मध्य प्रदेश मध्यप्रदेश

सांची बौद्ध विश्वविद्यालय में महात्मा गांधी पर विशेष व्याख्यान

September 26, 2019

गांधी जी की 150वीं वर्षगांठ पर आयोजन
"परिस्थियों से सीखते और सत्य को स्वीकारते थे गांधी"
- सांची बौद्ध विश्वविद्यालय में महात्मा गांधी पर विशेष व्याख्यान
- "आज भी प्रासंगिक हैं गांधी"
- वरिष्ठ साहित्यकार गोविंद मिश्र ने की छात्रों से परिचर्चा
- "स्वयं का साक्षात्कार करें तभी सफल होंगे"
- "अपने प्रति पूरी तरह ईमानदार थे गांधी जी"
- "रेल यात्रा के ज़रिए भारत को खोजा था गांधी ने"

रायसेन- राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं वर्षगांठ के मौके पर सांची बौद्ध- भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय रायसेन में एक विशिष्ट व्याख्यान आयोजित किया गया। गांधीवादी विचारक और साहित्यकार श्री गोविंद मिश्र ने बारला अकादमिक परिसर में दिए गए व्याख्यान में गांधी जी के व्यक्तित्व के कई अनछुए पहलुओं पर प्रकाश डाला। "भारत के चिरंतन मूल्य और महात्मा गांधी" विषय पर बोलते हुए श्री गोविंद मिश्र ने गांधी जी के व्यक्तित्व के आलोच्नात्मक पहलुओं पर भी बात की। उन्होंने कहा कि गांधी जी स्वयं के सबसे बड़े आलोचक थे और वे कभी भी अपने को बड़ा विचारक नहीं मानते थे। उनके इस गुण के कारण उनके विरोधियों के लिए भी गांधी जी अपरिहार्य थे। यही वजह है कि पूरा विश्व उन्हें आज भी प्रासंगिक मान रहा है।

उन्होंने कहा कि 23 सितंबर को न्यूयॉर्क में चल रही संयुक्त राष्ट्र "क्लाइमेट एक्शन समिट" और अमेरिकी कॉन्ग्रेस में जब 16 साल की स्वीडन मूल की लड़की ग्रेटा थनबर्ग ने जलवायु परिवर्तन पर ललकारा और दुनिया के लोगों से पूछा कि उन्हें क्या अधिकार है कि वे पर्यावरण को क्षति पहुंचाकर उसकी उम्र के बच्चों के भविष्य को खतरे में डाल रहे हैं, तब उन्हें गांधी जी याद आए।

श्री गोविंद मिश्र ने बताया कि 1905 में लिखी अपनी पुस्तक "हिंद स्वराज" में गांधी जी ने प्रकृति, ग्राम, शहरीकरण का विरोध, पश्चिमीकरण का विरोध इत्यादि पर ज़ोर दिया था। जिसकी अहमियत आज हमें समझ आ रही है जब हमारे शहर रहने लायक नहीं बचे हैं, अत्यधिक गर्मी-बाढ़ हमें नुकसान पहुंचा रही है और पूरे विश्व में प्राकृतिक असंतुलन पैदा हो गया है।

श्री गोविंद मिश्र ने कहा कि गांधी जी सदैव अपरिगृह पर ज़ोर देते थे यानी चीज़ों को इकट्ठा न करना। लेकिन आज ऐसा है कि कुछ परिवारों में प्रत्येक सदस्य के पास AC कारें हैं जबकि पूरे परिवार का एक कार से काम चल सकता था। इस तरह से पेट्रोल जलाकर, AC चलाकर प्रकृति को भी नुकसान पहुंचाया गया और अब हम कारों की बिक्री घटने पर भी चिंतित हो रहे हैं।

छात्रों को संबोधित करते हुए श्री गोविंद मिश्र ने कहा कि अगर आप पूरी ईमानदारी से अपना स्वयं का साक्षात्कार करते रहेंगे जिस तरह गांधी जी करते थे तो आप सफल होंगे। उन्होंने कहा कि गांधी जी अपने प्रति पूरी तरह ईमानदार थे।

श्री गोविंद मिश्र ने कहा कि गांधी जी अपनी आत्मकथा में पूरी ईमानदारी से ये स्वीकारते हैं कि पिछले तीस साल के अपने जीवन में(1918 से 1948 तक) वे स्वानुभूति के लिए प्रयास करते रहे, ईश्वर से साक्षात्कार के लिए आतुर रहे और मोक्ष क्या है तलाश करते रहे।

उन्होंने कहा कि गांधी जी के जीवन का अध्ययन यह बताता है कि वे अपने पूरे जीवन विकसित होता व्यक्तित्व थे, वे सीखते रहे, अपना निर्माण करते रहे.....वे कभी भी मूल(original) नहीं रहे यानी परिस्थितियों से सीखते थे, सत्य को स्वीकारते थे और उसे अपने व्यक्तित्व में, अपने जीवन में ढाल लेते थे। उन्होंने भारत के चिरंतन मूल्योंर को अपना लिया था।

श्री गोविंद मिश्र का कहना था कि गांधी जी ने हिंदुत्व के सही मूल को सदैव प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि गांधी जी ने आम लोगों के बीच जाकर उस दौर के आम विशुद्ध व्यक्ति से समझा कि वो धर्म को कैसे अपने जीवन में जीता है। श्री गोविंद मिश्र का कहना था कि गांधी जी रामचरित मानस और गीता के सार को अपने जीवन में प्रस्तुत करते थे कि- "ऐसा कोई भी कार्य न करें जिससे दूसरों को कष्ट हो" और "परोपकार से बड़ा कोई धर्म नहीं है"। उन्होंने कहा कि दक्षिण अफ्रीका से वापिस लौटने के बाद जब गांधी जी ने ट्रेन के ज़रिए पूरे भारत की यात्रा की तो सही मायनों में उन्होंने "भारत की खोज" की।

सांची विश्वविद्यालय में आयोजित किए गए इस विशेष व्याख्यान में अंग्रेज़ी विभाग के प्रो. ओ.पी बुधोलिया ने महत्मा गांधी के सहिष्णुता के सिद्धांत का ज़िक्र किया।

अपने विशिष्ट व्याख्यान और परिचर्चा के बाद श्री गोविंद मिश्र ने छात्र-छात्राओं से भेंट की और अपना कहानी संग्रह "प्रतिनिधि कहानियां" उन्हें भेंट की।

खबर अंचल
जन मानस का सरोकार

'परिस्थियों से सीखते और सत्य को स्वीकारते थे गांधी'

गांधी जी की 150वीं वर्षगांठ पर आयोजन

- सांची बौद्ध विश्वविद्यालय में महात्मा गांधी पर विशेष व्याख्यान
- "आज भी प्रासंगिक हैं गांधी"
- वरिष्ठ साहित्यकार गोविंद मिश्र ने की छात्रों से परिचर्चा
- "स्वयं का साक्षात्कार करें तभी सफल होंगे"
- "अपने प्रति पूरी तरह ईमानदार थे गांधी जी"
- "रेल यात्रा के ज़रिए भारत को खोजा था गांधी ने"

खबर अंचल, रायसेन। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं वर्षगांठ के मौके पर सांची बौद्ध- भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में एक विशिष्ट व्याख्यान आयोजित किया गया। गांधीवादी विचारक और साहित्यकार श्री गोविंद मिश्र ने बारला अकादमिक परिसर में दिए गए व्याख्यान में गांधी जी के व्यक्तित्व के कई अनछुए पहलुओं पर प्रकाश डाला। "भारत के चिरंतन मूल्य और महात्मा गांधी" विषय पर बोलते हुए श्री गोविंद मिश्र ने गांधी जी के व्यक्तित्व के आलोच्नात्मक पहलुओं पर भी बात की। उन्होंने कहा कि गांधी जी स्वयं के सबसे बड़े आलोचक थे और वे कभी भी अपने को बड़ा विचारक नहीं मानते थे। उनके इस गुण के कारण उनके विरोधियों के लिए भी गांधी जी अपरिहार्य थे। यही वजह है कि पूरा विश्व उन्हें आज भी प्रासंगिक मान रहा है।

उन्होंने कहा कि 23 सितंबर को न्यूयॉर्क में चल रही संयुक्त राष्ट्र "क्लाइमेट एक्शन समिट" और अमेरिकी कॉन्ग्रेस में जब 16 साल की स्वीडन मूल की लड़की ग्रेटा थनबर्ग ने जलवायु परिवर्तन पर ललकारा औऱ दुनिया के लोगों से पूछा कि उन्हें क्या अधिकार है कि वे पर्यावरण को क्षति पहुंचाकर उसकी उम्र के बच्चों के भविष्य को खतरे में डाल रहे हैं, तब उन्हें गांधी जी याद आए।

गोविंद मिश्र ने बताया कि 1905 में लिखी अपनी पुस्तक "हिंद स्वराज" में गांधी जी ने प्रकृति, ग्राम, शहरीकरण का विरोध, पश्चिमीकरण का विरोध इत्यादि पर ज़ोर दिया था। जिसकी अहमियत आज हमें समझ आ रही है जब हमारे शहर रहने लायक नहीं बचे हैं, अत्यधिक गर्मी-बाढ़ हमें नुकसान पहुंचा रही है और पूरे विश्व में प्राकृतिक असंतुलन पैदा हो गया है।

गोविंद मिश्र ने कहा कि गांधी जी सदैव अपरिगृह पर ज़ोर देते थे यानी चीज़ों को इकट्ठा न करना। लेकिन आज ऐसा है कि कुछ परिवारों में प्रत्येक सदस्य के पास AC कारें हैं जबकि पूरे परिवार का एक कार से काम चल सकता था। इस तरह से पेट्रोल जलाकर, AC चलाकर प्रकृति को भी नुकसान पहुंचाया गया और अब हम कारों की बिक्री घटने पर भी चिंतित हो रहे हैं।

छात्रों को संबोधित करते हुए गोविंद मिश्र ने कहा कि अगर आप पूरी ईमानदारी से अपना स्वयं का साक्षात्कार करते रहेंगे जिस तरह गांधी जी करते थे तो आप सफल होंगे। उन्होंने कहा कि गांधी जी अपने प्रति पूरी तरह ईमानदार थे।

गोविंद मिश्र ने कहा कि गांधी जी अपनी आत्मकथा में पूरी ईमानदारी से ये स्वीकारते हैं कि पिछले तीस साल के अपने जीवन में(1918 से 1948 तक) वे स्वानुभूति के लिए प्रयास करते रहे, ईश्वर से साक्षात्कार के लिए आतुर रहे और मोक्ष क्या है तलाश करते रहे।

उन्होंने कहा कि गांधी जी के जीवन का अध्ययन यह बताता है कि वे अपने पूरे जीवन विकसित होता व्यक्तित्व थे, वे सीखते रहे, अपना निर्माण करते रहे.....वे कभी भी मूल(original) नहीं रहे यानी परिस्थितियों से सीखते थे, सत्य को स्वीकारते थे और उसे अपने व्यक्तित्व में, अपने जीवन में ढाल लेते थे। उन्होंने भारत के चिरंतन मूल्योंर को अपना लिया था।

गोविंद मिश्र का कहना था कि गांधी जी ने हिंदुत्व के सही मूल को सदैव प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि गांधी जी ने आम लोगों के बीच जाकर उस दौर के आम विशुद्ध व्यक्ति से समझा कि वो धर्म को कैसे अपने जीवन में जीता है। गोविंद मिश्र का कहना था कि गांधी जी रामचरित मानस और गीता के सार को अपने जीवन में प्रस्तुत करते थे कि- "ऐसा कोई भी कार्य न करें जिससे दूसरों को कष्ट हो" और "परोपकार से बड़ा कोई धर्म नहीं है"। उन्होंने कहा कि दक्षिण अफ्रीका से वापिस लौटने के बाद जब गांधी जी ने ट्रेन के ज़रिए पूरे भारत की यात्रा की तो सही मायनों में उन्होंने "भारत की खोज" की।

सांची विश्वविद्यालय में आयोजित किए गए इस विशेष व्याख्यान में अंग्रेज़ी विभाग के प्रो. ओ.पी बुधोलिया ने महत्मा गांधी के सहिष्णुता के सिद्धांत का ज़िक्र किया।

Not secure | indiacitynews.com/news.php?post_id=162084

INDIAcity NEWS.com

होम देश विदेश राजनीति मध्य प्रदेश छत्तीसगढ़ बिजनेस स्पोर्ट्स मनोरंजन धर्म एवं ज्योतिष अजब-गजब हेल्थ पर्यटन 18+ फोटो वीडियो

खास ख़बर ल: पुल को लेकर राजनीतिक घमासान जारी, दूसरी बार होने जा रहा है उद्घाटन

Search

गांधी जी की 150वीं वर्षगांठ पर सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आयोजन

By India City News, 26 September, 2019, 18:03

'परिस्थियों से सीखते और सत्य को स्वीकारते थे गांधी'

- सांची बौद्ध विश्वविद्यालय में महात्मा गांधी पर विशेष व्याख्यान
- "आज भी प्रासंगिक हैं गांधी"
- वरिष्ठ साहित्यकार गोविंद मिश्र ने की छात्रों से परिचर्चा
- "स्वयं का साक्षात्कार करें तभी सफल होंगे"
- "अपने प्रति पूरी तरह ईमानदार थे गांधी जी"
- "रेल यात्रा के ज़रिए भारत को खोजा था गांधी ने"

indiacitynews. com

रायसेन।राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं वर्षगांठ के मौके पर सांची बौद्ध- भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में एक विशिष्ट व्याख्यान आयोजित किया गया। गांधीवादी विचारक और साहित्यकार श्री गोविंद मिश्र ने बारला अकादमिक परिसर में दिए गए व्याख्यान में गांधी जी के व्यक्तित्व के कई अनछुए पहलुओं पर प्रकाश डाला। "भारत के चिरंतन मूल्य और महात्मा गांधी" विषय पर बोलते हुए श्री गोविंद मिश्र ने गांधी जी के व्यक्तित्व के आलोच्नात्मक पहलुओं पर भी बात की। उन्होंने कहा कि गांधी जी स्वयं के सबसे बड़े आलोचक थे और वे कभी भी अपने को बड़ा विचारक नहीं मानते थे। उनके इस गुण के कारण उनके विरोधियों के लिए भी गांधी जी अपरिहार्य थे। यही वजह है कि पूरा विश्व उन्हें आज भी प्रासंगिक मान रहा है।

उन्होंने कहा कि 23 सितंबर को न्यूयॉर्क में चल रही संयुक्त राष्ट्र "क्लाइमेट एक्शन समिट" और अमेरिकी कॉन्ग्रेस में जब 16 साल की स्वीडन मूल की लड़की ग्रेटा थनबर्ग ने जलवायु परिवर्तन पर ललकारा औऱ दुनिया के लोगों से पूछा कि उन्हें क्या अधिकार है कि वे पर्यावरण को क्षति पहुंचाकर उसकी उम्र के बच्चों के भविष्य को खतरे में डाल रहे हैं, तब उन्हें गांधी जी याद आए।

श्री गोविंद मिश्र ने बताया कि 1905 में लिखी अपनी पुस्तक "हिंद स्वराज" में गांधी जी ने प्रकृति, ग्राम, शहरीकरण का विरोध, पश्चिमीकरण का विरोध इत्यादि पर ज़ोर दिया था। जिसकी अहमियत आज हमें समझ आ रही है जब हमारे शहर रहने लायक नहीं बचे हैं, अत्यधिक गर्मी-बाढ़ हमें नुकसान पहुंचा रही है और पूरे विश्व में प्राकृतिक असंतुलन पैदा हो गया है।

श्री गोविंद मिश्र ने कहा कि गांधी जी सदैव अपरिगृह पर ज़ोर देते थे यानी चीज़ों को इकट्ठा न करना। लेकिन आज ऐसा है कि कुछ परिवारों में प्रत्येक सदस्य के पास AC कारें हैं जबकि पूरे परिवार का एक कार से काम चल सकता था। इस तरह से पेट्रोल जलाकर, AC चलाकर प्रकृति को भी नुकसान पहुंचाया गया और अब हम कारों की बिक्री घटने पर भी चिंतित हो रहे हैं।

छात्रों को संबोधित करते हुए श्री गोविंद मिश्र ने कहा कि अगर आप पूरी ईमानदारी से अपना स्वयं का साक्षात्कार करते रहेंगे जिस तरह गांधी जी करते थे तो आप सफल होंगे। उन्होंने कहा कि गांधी जी अपने प्रति पूरी तरह ईमानदार थे।

श्री गोविंद मिश्र ने कहा कि गांधी जी अपनी आत्मकथा में पूरी ईमानदारी से ये स्वीकारते हैं कि पिछले तीस साल के अपने जीवन में(1918 से 1948 तक) वे स्वानुभूति के लिए प्रयास करते रहे, ईश्वर से साक्षात्कार के लिए आतुर रहे और मोक्ष क्या है तलाश करते रहे।

उन्होंने कहा कि गांधी जी के जीवन का अध्ययन यह बताता है कि वे अपने पूरे जीवन विकसित होता व्यक्तित्व थे, वे सीखते रहे, अपना निर्माण करते रहे.....वे कभी भी मूल(original) नहीं रहे यानी परिस्थितियों से सीखते थे, सत्य को स्वीकारते थे और उसे अपने व्यक्तित्व में, अपने जीवन में ढाल लेते थे। उन्होंने भारत के चिरंतन मूल्योंर को अपना लिया था।

श्री गोविंद मिश्र का कहना था कि गांधी जी ने हिंदुत्व के सही मूल को सदैव प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि गांधी जी ने आम लोगों के बीच जाकर उस दौर के आम विशुद्ध व्यक्ति से समझा कि वो धर्म को कैसे अपने जीवन में जीता है। श्री गोविंद मिश्र का कहना था कि गांधी जी रामचरित मानस और गीता के सार को अपने जीवन में प्रस्तुत करते थे कि- "ऐसा कोई भी कार्य न करें जिससे दूसरों को कष्ट हो" और "परोपकार से बड़ा कोई धर्म नहीं है"। उन्होंने कहा कि दक्षिण अफ्रीका से वापिस लौटने के बाद जब गांधी जी ने ट्रेन के ज़रिए पूरे भारत की यात्रा की तो सही मायनों में उन्होंने "भारत की खोज" की।

सांची विश्वविद्यालय में आयोजित किए गए इस विशेष व्याख्यान में अंग्रेज़ी विभाग के प्रो. ओ.पी बुधोलिया ने महत्मा गांधी के सहिष्णुता के सिद्धांत का ज़िक्र किया।

अपने विशिष्ट व्याख्यान और परिचर्चा के बाद श्री गोविंद मिश्र ने छात्र-छात्राओं से भेंट की और अपना कहानी संग्रह "प्रतिनिधि कहानियां" उन्हें भेंट की।
Source ¦¦ जनसम्पर्क शाखा साँची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय, भोपाल